ISSN No. : 2395-4000

13

प्रयाण-पथ

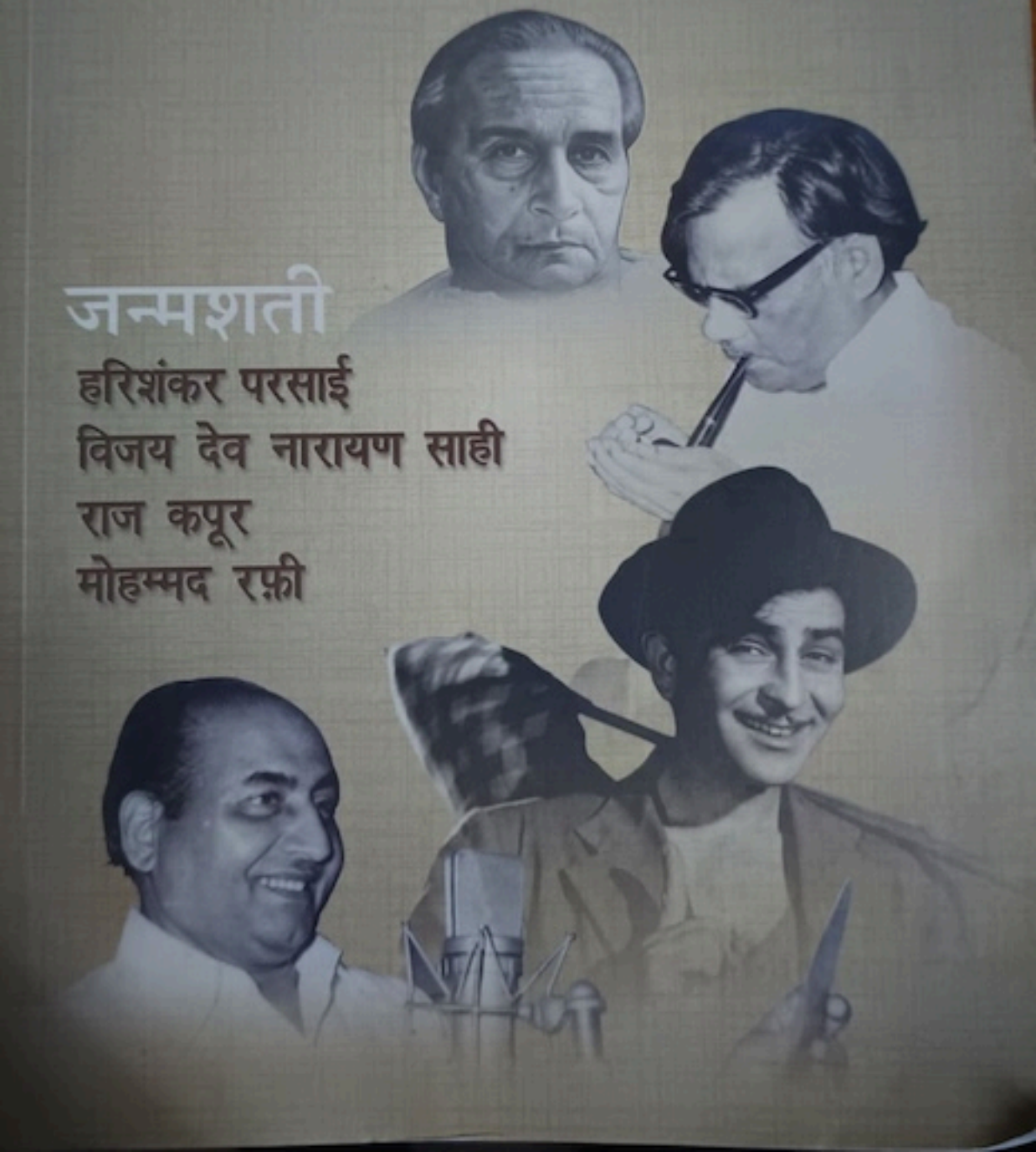

जन्मशती

हरिशंकर परसाई
विजय देव नारायण साही
राज कपूर
मोहम्मद रफ़ी

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 10, संयुक्तांक : 14-17, पूर्णांक : 13, अक्टूबर : 2024

ISSN : 2395-4000

सम्पादक

हितेश कुमार सिंह

सह-सम्पादक

डॉ० नीतू सिंह

आवरण : अजय जेतली

अक्षर संयोजन : 'नीलकॉम', 515/258/24, सोहबतियाबाग, प्रयागराज, मो० 9935502950

मुद्रक : ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा० लि० 164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज, 211002, उ० प्र०

मूल्य : एक प्रति : रु० 100 (व्यक्तिगत) रु० 150 (संस्थागत)

सदस्यता :
चार अंक : रु० 500.00 (डाक खर्च सहित)
आजीवन : रु० 5000.00 (पाँच हजार मात्र)

सम्पर्क :
353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज, 211002, उ० प्र०
मोबाइल : 9452790210
ई-मेल-prayagpathpatrika@gmail.com

- सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबन्धन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यावायिक
- पत्रिका में प्रकाशित विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक और प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
- सम्पादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज होगा।
- स्वामी-सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 353/183/2, टैगोर टाउन प्रयागराज के लिए ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा० लि० 164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002 से प्रकाशित और मुद्रित।

अनुक्रम

- सम्पादक की ओर से.....
- **हरीश चन्द्र पाण्डे** की दस कविताएं 1
- पाठकों की स्मृति में स्वतः दर्ज होती हरीश चन्द्र पाण्डे की कविताएं : **संतोष कुमार चतुर्वेदी** 11

लेख

- भारतीय काव्य-परम्परा और कवि प्रसाद : **विजय बहादुर सिंह** 25
- हम उत्तराधुनिकता का प्रतिपक्ष है : **विनोद शाही** 29
- समाज विज्ञानियों की युरोकेंद्रियता और भाषा-साहित्य के सवाल : **तृप्ति श्रीवास्तव** 37

कहानियाँ

- कथा लल्लू लखनलाल की : **महेश कटारे** 47
- बदलते हैं रास्ते हर रोज : **रजनी गुप्त** 68
- आर्य सत्य : **धनेश दत्त पाण्डेय** 77

शताब्दी-I : हरिशंकर परसाई

- परसाई के प्रेमचंद : **राजेन्द्र कुमार** 91
- परदुःखकातर परसाई : **अब्दुल बिस्मिल्लाह** 101
- किताबी लेखक नहीं थे हरिशंकर परसाई : **वीरेन्द्र मोहन** 105
- हरिशंकर परसाई की आलोचनात्मक दृष्टि : 'भोलाराम का जीव' : **इतु सिंह** 111
- 'लंका विजय के बाद'–आजादी के बाद की व्यथा-कथा : **प्रशांत गौरव** 115
- 'भोलाराम का जीव'–भ्रष्टाचार पर एक मार्मिक व्यंग्य : **नंदराम** 122
- परसाई के व्यवस्था-विरोध की शक्ति और सीमा : **शिल्पी** 126
- हरिशंकर परसाई के साहित्य में कबीर : **चन्द्रशेखर कुशवाहा** 132

शताब्दी-II : विजय देव नारायण साही

- अपने-अपने संसार में साही : **अरुण कुमार** 141
- लोकतंत्र के महत्व और मूल भावना को समझाने वाले साही जी : **हेरम्ब चतुर्वेदी** 154
- उन्हें सही बात कहने से रोक पाना मुश्किल था : **अरविन्द त्रिपाठी** 158
- विश्वविद्यालय में साही : **महेश चन्द्र चट्टोपाध्याय** 167
- 'सत की परीक्षा'–अपने समय पर पड़ी धूल को साफ करने का प्रयास : **बृजेश कुमार पाण्डेय** 170

कविताएं

- कविताएं : **जितेन्द्र श्रीवास्तव** 176
- कविताएं : **सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी** 184
- कविताएं : **गरिमा सिंह** 192
- कविताएं : **आशुतोष कुमार श्रीवास्तव** 200
- कविताएं : **टी. पी. पोद्दार** 179
- कविताएं : **शिशिर सोमवंशी** 187
- कविताएं : **शैलेन्द्र जय** 197

शताब्दी-III : राज कपूर

- नेहरू युग और राजकपूर का सिनेमा : **जवरीमल्ल पारख** 207
- ब्लैक एण्ड व्हाइट फिल्मों का दौर और राज कपूर : **अमेय कान्त** 223

शताब्दी-IV : मोहम्मद रफ़ी

- फिल्म पुरुष गायिकी के देवदूत मोहम्मद रफ़ी : **इन्द्रजीत सिंह** 229
- शहंशाह-ए-तरन्नुम मोहम्मद रफ़ी : **रक्षा गीता** 240

विमर्श

- 'चचा रमजान'–समकालीन कहानी की दृष्टि में : **भारत भारद्वाज** 246
- 'विचार का आईना'–वैचारिक विरासत की संरक्षा समीक्षा : **कुमार वीरेन्द्र** 249
- एक कलम का डाइंग डिक्लेरेशन उर्फ राजकमल चौधरी का 'मुक्तिप्रसंग' : **मित्रेश्वर अग्निमित्र** 257

समीक्षाएं

- यायावरी का रोचक, ऐतिहासिक एवं विविधवर्णी स्वरूप : **सरोज सिंह** 262
- किसानों के संघर्ष और पीड़ा का सच्चा आख्यान–'माटी राग' : **स्मृति शुक्ल** 266
- इतिहास में प्रतापगढ़ और उसकी क्रांतियां : **बृजेश कुमार श्रीवास्तव** 270
- 'तिरहार' का पंचनामा : **गौरव पाण्डेय** 274
- विविधताओं में विशेष–'सिराज-ए-दिल जौनपुर' : **सविता मोहन** 279
- फतेहपुर सीकरी के उद्भव और विकास का पुनरावलोकन : **नीरज कुमार सिंह** 285
- ऐतिहासिकता की कसौटी पर 'चन्द्रशेखर आजाद–मिथक बनाम यथार्थ' : **नवनीत कुमार सारस्वत** 287
- पंडित राधेश्याम कथावाचक के नाटक 'परिवर्तन' का पुनरावलोकन : **वर्षा** 294
- शहरी मध्यवर्ग की समस्याओं से जुड़ी कहानियां : **शिवेन्द्र सिंह** 297
- मनुष्य बनाने में सहायक–'उदासी का ध्रुपद' : **प्रवीण माधव** 299
- प्राकृतिक संसाधनों और मानव मूल्यों को संजोती कविताएं : **अभिषेक राय** 302
- 'बोरसी भर आंच'–एक की कहानी, सैकड़ों की दास्ताँ : **साकिब अहमद** 306
- पारिवारिक प्रतिछवियों के माध्यम से समाज की नग्न सच्चाईयों से मुठभेंड 'ख्वाब सा कुछ' : **रमेश शर्मा** 308
- सौन्दर्य बोध, सृजनशीलता व संवेदना का समाहार–'कुँवर नारायण एक संचयन' : **अजय कुमार पटनायक** 313

सम्पादक की ओर से.....

हमारी भाषा के साथ राजनीतिक छेड़छाड़ और पूँजी लोलुप उपभोक्तावाद के चलते 'संस्कृति' और 'परंपरा' जैसे पदों की गरिमा को आज जिस तरह से गिराया जा रहा है, वह हमारी गहरी चिंता का विषय है। भाषा की गरिमा का गिरते जाना साहित्य और शिक्षा की दृष्टि से तो शोचनीय है ही साथ ही इसे एक व्यापक अर्थ में मनुष्य के मनुष्य होने की पहचान को भी संकट में डालने वाली भयानक परिघटना के रूप में चिन्हित किया जाना चाहिए। प्रेमचन्द ने आजादी से बहुत पहले ही आगाह किया था कि सांप्रदायिकता भी अक्सर 'संस्कृति' का चोला पहनकर हमारे सामाजिक जीवन में जगह बनाने के अवसर पा जाती है। हमारी भारतीय संस्कृति कोई एक दिन में नहीं बनी बल्कि इसके बनने में कई युग लग गए। समय के साथ-साथ इस संस्कृति के निर्माण में हमारी नैतिकता, ईमानदारी, विनम्रता, हमारे मानवमूल्य और धर्म इत्यादि का अप्रतिम योगदान रहा है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को संस्कृति का आधार माना था और इस शिक्षा के लिए उन्होंने चारित्रिक और नैतिक मूल्यों के विकास पर बल दिया था। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य हमें सुसंस्कृत बनाना है न कि डिग्रीधारी बनाना। बड़े-बड़े शैक्षिक डिग्रीधारी व्यक्ति जिस तरह से अपने कर्तव्यों के प्रति असंवेदनशील और किंकर्तव्यविमूढ़ दिखाई देते हैं, वह हममें निराशा और चिंता पैदा करने वाली बात है। शिक्षा पुस्तकों को रटकर परीक्षाएँ उत्तीर्ण करते जाना नहीं है। ज्ञान को आत्मसात करने से ही हमारे चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह निर्माण ऐसा होना चाहिए जिसमें प्राचीन और आधुनिक दोनों ज्ञान शामिल हों। यह चरित्र ही है, जो समाज का निर्माण करता है और इसी समाज से देश का निर्माण होता है।

यह वर्ष कई शख्सियतों का शताब्दी वर्ष है। इन शख्सियतों में 'प्रयाग-पथ' ने चार (हरिशंकर परसाई, विजय देव नारायण साही, राज कपूर और मोहम्मद रफ़ी) को याद किया है।

हरिशंकर परसाई ने अपने लेखन का प्रारम्भ व्यंग्यात्मक निबंधों और व्यंग्य कथाओं से किया। उन्होंने व्यंग्य को साहित्य की एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया। स्वातन्त्रयोत्तर भारत की शायद ही कोई धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति रही हो, जिस पर परसाई ने कलम न चलाई हो। लेखन के प्रति उनके समर्पण एवं अनवरत परिश्रम को कहानीकार ज्ञानरंजन 'कलेजा-काट निचोड़-निचोड़ कर देना' कहते हैं।

*हरिशंकर परसाई की पहली रचना 23 नवम्बर 1948 ई0 में जबलपुर से प्रकाशित 'प्रहरी' में 'दूसरों की चमक-दमक' 'अघोर भैरव' के नाम से प्रकाशित हुई। यही उनकी रचनावली में 'पैसों का खेल' नाम से छपी है। अपने व्यंग्यरूपी हथियार को उन्होंने अलग-अलग पत्रिकाओं में अलग-अलग नाम के स्तम्भों के माध्यम से चलाया। 'कल्पना' पत्रिका में उनका स्तम्भ **'और अन्त में'** तथा नामवर सिंह द्वारा सम्पादित 'जनयुग' में **'माज़रा क्या है'**, 'आदम' नाम से निकला। 'सारिका' पत्रिका में **'कबिरा खड़ा बाजार में'**, **'माटी कहे कुम्हार से'**, 'नई दुनिया' में **'सुनो भई साधो'** नाम से व्यंग्य स्तम्भ लिखे। वह मायाराम सुरजन के 'देशबंधु' में **'पूछिए परसाई से'** नामक स्तम्भ नियमित रूप से लिखते रहे।*

हरिशंकर परसाई की चेतना के मूल में भारत के मजदूर किसान मध्यम वर्ग आदि के दुःख दर्द है। उनकी रचनाएँ स्वतंत्रता के बाद के दिनों के मोहभंग की अभिव्यक्त करती है।

विजय देव नारायण साही हिन्दी की 'नयी कविता' के दौर के प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक हैं। वह अज्ञेय के 'तीसरा सप्तक' के कवियों में से एक हैं। मलिक मुहम्मद जायसी पर केन्द्रित उनका व्यवस्थित कार्य जायसी पर अब तक का सर्वोत्कृष्ट कार्य है। साहित्य जगत में 'बहस करता हुआ आदमी' के रूप में प्रख्यात साही अपनी बहसतलब टिप्पणियों और व्याख्यानों के लिए अलग से पहचाने जाते हैं। उनके जीवन काल में उनका एक ही काव्यसंग्रह 'मछली घर' (1966) प्रकाशित हुआ था। उनके व्याख्यानों का संकलन 'साहित्य और साहित्यकार का दायित्व' और सामाजिक राजनीतिक विषयों का संकलन 'लोकतंत्र की कसौटियाँ' हैं। 'छठवाँ दशक' (1987), 'साहित्य क्यों' (1988) और 'वर्धमान और पतनशील' (1991) उनके अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। उन्होंने ललित निबंध, कहानी, नाटक और प्रहसन जैसी विधाओं में भी लिखा। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं अन्य मित्रों के साथ उन्होंने 'सड़क साहित्य' का भी सृजन किया। 'आलोचना' और 'नयी कविता' पत्रिकाओं के सम्पादन में उनका सहयोग रहा।

कविता में 'लघु मानव' की अवधारणा और समकालीन स्थापनाओं को चुनौती देते रहने के लिए उन्हें विशेष यश प्राप्त है। उन्हें 'कुजात मार्क्सवादी' भी कहा गया। मार्क्सवाद की यांत्रिक और कट्टर समझ के बरक्स साही ने अपने विचारों को भारतीय जन-मानस के मूल तंतुओं की बुनावट के अनुरूप ग्राह्य बनाते रहने की कोशिश का एक प्रतिमानात्मक स्वरूप सामने रखा।

साही मात्र साहित्यकार ही नहीं थे बल्कि एक राजनैतिक कार्यकर्ता भी थे। डॉ० राम मनोहर लोहिया एवं आचार्य नरेन्द्र देव का सान्निध्य प्राप्त साही ने बुनकरों की कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए कानून की किताबें पढ़ी और न्यायालय में उनकी पैरवी भी की। यही नहीं, लोहिया के आदेश पर भदोही लोकसभा से चुनाव भी लड़ा और थोड़े ही मतों से पराजित हुए। कुल मिलाकर उनका जीवन समाज के अन्तिम व्यक्ति के प्रति समर्पित रहा।

राज कपूर हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता एवं निर्देशक थे। नेहरूवादी समाजवाद से प्रेरित होकर वह अपनी शुरूआती फिल्मों से लेकर प्रेम कहानियों को मादक अंदाज से रूपहले पर्दे पर प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते रहे। वह भारत में अपने समय के सबसे बड़े शो मैन थे। सन् 1951 में प्रदर्शित फिल्म 'आवारा' हिन्दी सिनेमा के इतिहास के मील का पत्थर साबित हुई। इसने नायक के रूप में राज कपूर को एक नयी और अलग पहचान दी। 'आवारा' ने ही राज कपूर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। वह सोवियत रूस में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गए। चीन के सबसे बड़े नेता माओत्से तुंग ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि 'आवारा' उनकी सर्वाधिक पसंदीदा फिल्म है। 'आवारा' में उनके प्रदर्शन को 2005 में 'टाइम' पत्रिका द्वारा विश्व सिनेमा में अब तक के शीर्ष दस महानतम प्रदर्शनों में से एक के रूप में स्थान दिया गया। वे हिन्दी और भारतीय सिनेमा के ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उसे एक विश्व मंच प्रदान किया।

मोहम्मद रफ़ी, हिन्दी सिनेमा के श्रेष्ठतम पार्श्वगायकों में से एक थे। अपनी आवाज़ की मधुरता के लिए उन्होंने अपने समकालीन गायकों के बीच अलग पहचान बनाई। उन्हें 'शंहशाह-ए-तरन्नुम' भी कहा जाता था।

हमारे लिए अतीव शोक का विषय है कि पिछले दिनों हिन्दी की प्रसिद्ध कथाकार ऊषा किरण खान, मालती जोशी, प्रसिद्ध जनवादी गीतकार माहेश्वर तिवारी, कथाकार और जापान में हिन्दी के प्रोफेसर रहे लक्ष्मीधर मालवीय, आलोचक चौथी राम यादव, कांति मोहन, शरद पगारे और पंजाबी ही नहीं भारतीय प्रगतिशील परम्परा के महत्वपूर्ण कवि सुरजीत पातर अब हम लोगों के बीच नहीं रहे। इन सबकी स्मृति को हम सादर नमन करते हैं।

हितेश कुमार सिंह

हरीश चन्द्र पाण्डे की दस कविताएं

(1) दो दृश्य

संदर्भ : करौना काल

(i)

एक अटैची सस्ती सी
उसे अभी किसी कमरे में होना था
वह सड़क पर है

एक औरत है
उसे इस वक्त घर-बाहर के किसी काम में होना था
सड़क पर है

एक रस्सी है
जिसे सड़क पर कतई नहीं होना था
सड़क पर है

वह तनाव में तो है
पर औरत और अटैची के बीच